Nature Of Civics
[नागरिक शास्त्र की प्रकृति]

नागरिकशास्त्र एक विज्ञान है —
[Civics as a Science]

कुछ विद्वानों के अनुसार नागरिक शास्त्र एक शुद्ध विज्ञान तो नहीं, पर यह अनिश्चित विज्ञान अवश्य है। आधुनिक ज्ञाता इसे एक आदर्श विज्ञान की संज्ञा देते हैं। इसके अन्तर्गत इस बात को प्रस्तुत किया जाता है कि "क्या होना चाहिए"। अतः यह हमारे सम्मुख भविष्य की योजना प्रस्तुत करता है और उचित अनुचित का ज्ञान कराता है।

लॉर्ड ब्राइस का मत है कि "नागरिकशास्त्र वैसा ही विज्ञान है जैसा कि अन्तरिक्ष विज्ञान है"

नागरिकशास्त्र अतीत की घटनाओं के सन्दर्भ में पर्याप्त सीमा तक सही अनुमान लगाने में सहायक होता है। अतः यह निश्चित विज्ञान न होकर अनिश्चित विज्ञान है जिसके पक्ष में हम निम्नांकित तर्क दे सकते हैं —

1. विज्ञान हेतु ज्ञान का सुनियोजित व व्यवस्थित होना आवश्यक है और नागरिकशास्त्र में ज्ञान को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
2. इसके अन्तर्गत ऐसे अनेक नियमों एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है जिनकी सत्यता के विषय में कोई संदेह नहीं किया जा सकता है।

प्राचार्य
महाविद्यालय
प्रशिक्षण संस्थान
ताखा, बलिया

3. इसे हम एक आदर्श विज्ञान भी कह सकते है, क्योंकि यह शास्त्र सामाजिक हित की दृष्टि से कुछ आदर्शों या मापदण्डों को प्रस्तुत करता है।

4. नागरिकशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है और मनुष्य का यह एक सामाजिक प्राणी के रूप में अध्ययन करता है।

5. नागरिकशास्त्र के अन्तर्गत प्रयुक्त की जाने वाली विधियाँ पूर्णतः वैज्ञानिक होती

6. इसके अन्तर्गत भूतकाल के आधार पर भविष्य की योजना प्रस्तुत करने की सम्भावना होती है।

नागरिक शास्त्र एक कला है — [Civics as an Art]

नागरिकशास्त्र एक कला भी है। मात्र एक विज्ञान ही नही जीवन को सुन्दर बनाने के लिए जो कार्य किये जाते है उनके परिणाम को उचित ढंग से प्रयोग करना ही कला कहा जाता है। ज्ञान को व्यवहारिक जीवन में प्रयोग करना ही कला है।

टॉलसटॉय के शब्दों में, "कला एक मानवीय प्रयास है जिसमे मानव अपनी उन भावनाओं को, जिनका उसने अपने जीवन मे साक्षात्कार किया हो, ज्ञानपूर्वक कुछ संकेतों द्वारा प्रकट करता है तथा उन भावनाओं का दूसरों पर प्रभाव

पड़ता है और वे भी उसकी अनुभूति करते है।"

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर स्पष्ट होता है कि नागरिक शास्त्र एक विज्ञान के रूप में न केवल ज्ञान ही प्रदान करता है बल्कि एक कला के रूप में यह सामाजिक आदर्शों के सन्दर्भ में नागरिकों को समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ एवं सक्रिय जीवन व्यतीत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार नागरिकशास्त्र कला व विज्ञान दोनों ही है। इस बात को स्पष्ट करते हुए डा० बेनी प्रसाद कहते है कि, "नागरिक-
- शास्त्र विज्ञान और कला दोनों है क्योंकि यह दशाओं का अन्वेषण करता है और अपने अन्वेषण के परिणामों को मानव कल्याण की वृद्धि में क्रियान्वित करने का प्रयास करता है।"

19/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

विद्यालय में नागरिकशास्त्र की आवश्यकता
[Need of Civics in School]

लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब उसके नागरिक सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से सजग होंगे। उनको सजग बनाने के लिए उन्हें अपने कर्त्तव्यों एवं अधिकारों का ज्ञान कराना परमावश्यक है इसके अतिरिक्त उनमें उत्तरदायित्व ग्रहण करने तथा उसका पूर्ण क्षमता के अनुसार निर्वाह करने की भावना का विकास होना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लोकतन्त्रीय भारत की शैक्षिक आवश्यकताओं पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "शिक्षा व्यवस्था को आदतों, दृष्टिकोणों और चरित्र के गुणों के विकास में योगदान देना पड़ेगा, जिससे कि नागरिक लोकतंत्र नागरिकता के दायित्वों का योग्यता से निर्वाह कर सकें और उन ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का विरोध कर सकें जो व्यापक राष्ट्रीय और धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण के विकास में बाधक है।"

उक्त सभी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं नागरिकता के विकास के लिए नागरिकशास्त्र का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया